सतगुरू संगत लाभ

१ नाम दान (सार सब्द) जो सतपुरूष सुरती से सतगुरू की सुरती में डालते हैं।
२ सतगुरू सुरती से जब सतपुरूष सुरती का मेल होता है वह पारस सुरती बन जाती है।
३ नाम दान देते समय सतगुरू पारस सुरती जीव के मन और आत्मां को अलग कर देती है।
४ अच्छे बुरे का भेद मिलता है।
५ क्या करूं, क्या नां करूं, सुरती से जाना जाता है।
६ सुरती से सुनना, सुरती से देखना, कुछ नां करना।
७ सुरती से सुनना, कुछ नां बोलना, बहुत कम बोलना।
८ दुश्मन से सन्धि करना, कोई वचन नां देना।
९ भूतकाल को भूल जाना, वर्तमान काल में ईसी पल में जीना, सदा सुरती में रहना।
१० श्रद्धा और विश्वास जगाना।
११ सदैव सुरती में रहना, विचार व मनन नहीं करना।
१२ निरख परख के सतगुरू से सब्द लेना।
१३ वहम को कौसों दूर रखना, ये प्रेम तार तौड़ देता है।
१४ सत्संग की महत्वता।
१५ प्रेम का फूल खिलने लगता है।
१६ ध्यान ही आत्मां, ध्यान ही सुरती का भेद।
१७ सुरती जागी, मन माया नांहि (कुछ भी नांहि), संसार गया।
१८ सत्संग के लाभ :–
१ अच्छे बुरे का भेद।
२ क्या करूं और क्या नां करूं।
३ सतगुरू सुरती, वाणी, दर्शन सुरती एकाग्र करे।
४ मन, मान, माया, औंकार का संग टूट जाता है।
५ प्रेम की जोत जग जाये।
६ शब्द और सब्द में भेद मिलता है।
७ ज्ञान क्या है – इसकी जानकारी मिलती है।
८ भक्ति में कर्मों का महत्व।
४ चौथे लोक (अमर लोक/सत खंड)की जानकारी,चौथा लोक ही हम सब हंसों का सच्चा देश और घर है।
५ पूर्ण मोक्ष की जानकारी मिलती है।
६ गुरू और सतगुरू में भेद।
७ सतपुरूष ही अमरलोक और उनका हम सब हंसों से नाता।
८ रिश्ते नाते ही तो बंधन का कारण हैं।
९ रोग, सोग, ताप, संताप का भेद और कारण।
१० सब्द महान की महिमां।

११ सतगुरू सम भगवान/औंकार/निरंकार की महिमां नांहि।
१२ सतगुरू भक्ति (परा भक्ति) निर्गुण सर्गुण से पारा।
१३ तीन लोक में मन है राजा, चौथा लोक सतपुरूष का प्यारा।
१४ सतगुरू चौथे लोक का भेदी, आत्मां और मन को अलग करना।
१५ साधक को अमरपुर कैसे संग लेता है।
१६ चौथे लोक (अमरपुर) का आद और अंत नांहि।
१७ पाँच चौर – काम, क्रौध, लोभ, मोह, अहंकार को आत्मां से अलग करता है।
१८ जात, धर्म, पंथ, पद – प्रेम में जान दरार।
१९ सतगुरू दास/गुलाम होता है – सेवा करता है करवाता नहीं।
२० सार सब्द – सुरत सब्द की महिमां न्यारी।
२१ ज्ञान समाधि सुरती सूं।
२२ सुरती सब्द, स्वांसा, सुरती ईक तार कैसे बने।
२३ उल्टा चिराग़ शीष गगन में कैसे।
२४ सब्द निरंतर सूं ताड़ी कैसे लागी।
२५ मलीन वासना कैसे त्यागी जाये।
२६ गृह हमारा निजधाम कैसे है।
२७ नाम कमाई नांहि – सतगुरू कृपा करे सब काम।
२८ सुरत कमल, ग्यारवें द्वार की जानकारी।
२९ चौथे लोक के प्यारे राम निर्लम्भ राम हैं।
३० मन कारण सुरती क्युं नहीं जगती।
३१ बिन सतगुरू सुरती आत्म नहीं जगती।
३२ हमारे अंदर राम कैसे।
३३ हम जो खाते हैं, वह क्या है और उसे कैसे खाना चाहिये।
३४ इस भवसागर से पार कैसे जा सकते हैं।
३५ धुणों का सुनना क्या है।
३६ सतगुरू सतपुरूष का तदरूप कैसे है।
३७ सतगुरू आत्मां को हंसा कैसे बनाते हैं।
३८ सहज अवस्था कैसे आती है।
३९ संगीत जब पूर्ण हो गया – टूटे उसके तार का भेद।
४० अन्न भी जानो राम कैसे।
४१ ईन्द्रियां नत मस्तक राम कैसे।
४२ पूर्ण मोक्ष कब और कैसे।
४३ नाम सूं – सुहागन हो सतगुरू संग अमरपुर द्वार कैसे।
४४ सतगुरू महिमां और वेदों की महिमां में भेद।
४५ गुरू भक्ति कर्म अनुसारा – सतगुरू भक्ति निर्गुण सगुण से पारा।
४५ सतगुरू सब्द सदा रखवारा – भूत पिशाच से रखे न्यारा कैसे।

४६ प्रलय में सब मिटने को तैयार – तब आत्मां कहां होती है का भेद।
४७ सतगुरू, सब्द – दोनों सहज कैसे होते हैं – आत्मां कैसे सहज हो।
४८ सब्द निरंतर सूं ताड़ी लागी कैसे।
४९ उठत बैठत कबहु ना टूटे – निरंतर ऐसी सुरती लागी कैसे।
५० जात हमारी सतनाम है – माता पिता निर्लम्भ राम कैसे।
५१ हम कैसे निष्कामी बन सकते हैं।
५२ भ्रम जाल कैसे तौड़ा जाये।
५३ तीन लोक में पूर्ण क्युं नहीं – कारण क्या है।
५४ निज में निज को पाने के लिये – सहज कैसे हूं।
५५ वेद क्युं सतपुरूष की कोई जानकारी नहीं देते।
५६ सशुप्ति और तुरियातीत अवस्था की जानकारी कैसे हो।
५७ सुरती निरती आत्मां का जोड़ कैसे ?
५८ खर, अक्षर, निःअक्षर का भेद कैसे पाओ ?
५९ आशा में सेवा का कोई लाभ नहीं कैसे ?
६० मान क्या हमारा शत्रु है – पर कैसे ?
६१ मित्र, स्तर से छोटा बड़ा क्युं ?
६२ भाव वंत बनो – क्यों, कैसे ?
६३ निर्लोभी, निष्कामी सतगुरू महान कैसे ?
६४ सतगुरू दर्शन बार बार क्युं ?
६५ सतगुरू, 'किल्ली' क्युं और कैसे ?
६६ सुरती ध्यान, कथा कीर्तन की महत्वता कैसे ?
६७ सतगुरू सब्द मोक्ष प्रदान कैसे है ?
६८ सतगुरू महिमां, महंदि, कदली, सीप, भुजंग मुख से क्युं की गई ?
६९ दुख सुख एक समान कैसे लें ?
७० निज का दोष क्युं नहीं दिखता ?
७१ चाह गई, चिंता मिटी कैसे ?
७२ सत्संग में सतगुरू संग विरह और विराग कैसे उत्पन्न होता है ?
७३ सत जानी, संतन संग कैसे ?
७४ हमारे अंदर लाल रत्न कैसे और क्युं हैं ?
७५ जीवन में जीव का जागना कैसे हो का भेद ?
७६ हम कहां से आये – क्युं और कहां जाना है हमको ?
७७ नाम बिन सभी झूठ कैसे ?
७८ गुरू मन क्यों ?
७९ मन का तजना सहल नां क्यों ?
८० सत, तप, भक्ति, प्रेम, विराग़ क्युं सहज के अंग हैं ?

८१ शांत होना ही पाना है, कैसे और क्यों ?
८२ दुख सुख दोनों काल क्यों और कैसे ?
८३ निर्गुण सगुण में सहज के गुण नांहि, चार युग ईक कैसे हों ?
८४ मुक्ति फल, भक्ति, कर्म, चार मोक्ष के धाम कैसे और क्यों ?
८५ चार मुक्ति अवधि पश्चात पुनः गर्भ स्थान क्यों ?

साहिब सतनाम साहिब सतनाम

1 सुबह उठते ही सार सब्द सिमरण–ध्यान कर के साहिब सतगुरू का ध्यान करें ।
2 ईंगला पिंगला सम करें व प्राणायाम और व्यायाम करें ।
3 हर खाना (तीनों वक़्त का) या कुछ भी खाने से पहले कम से कम सात बार सार सब्द का सिमरण कर साहिब को अर्पण कर के फिर ग्रहन करें, कोई भी बिमारी तक नहीं लगेगी ।
4 सुबह शाम सांसा द्वारा संकल्प विधि का इस्तेमाल करें ।
5 सुरति निरति व मूलसुरति ध्यान में रखकर साहिब सिमरण करें।
6 सुरत शब्द का ध्यान करें, पहले सांसा को निहारें, अपने आप को निहारें, ध्यान केंद्रित हो जाने पर सम होने के बाद उल्टा जाप करें।
7 साहिब महिमां के भजन सिमरें और सुने, गांए और कंठित करें।
8 किसी भी काम को शुरू करने से पहले सार सब्द का ध्यान करें, फिर मात्र दृष्टा बन कर साहिब को कर्ता रूप में देखें ।
9 साहिब महिमां में बताए गए 10 वचनों को अमल में लांए ।
10 आरती द्वारा साहिब को जाने और सुबह शाम आरती करें ।
11 अपने कचरे को समाप्त करने के लिए साहिब शरण में आऐं।
12 सत्संग किसी भी कीमत पर ना छोड़ें। 21 लौकों (ब्रह्मण्ड भ्रमण) का ज्ञान लेकर उनकी सैल की तैयारी करें।
13 भाव,श्रद्धा, काव्य, प्रेम और सुरति की भाषा को जाने व समझें ।
14 वहम भ्रम व झूठी धारणाएं,मान्यताएं इनसे उपर उठें,सब कचरा है।
15 अपने आप को दुनियाबी मोह और फींकरों से (आशा तृष्णा) से मुक्तकरें, बस केवल पूर्ण समर्पित हो जाएं साहिब चरणों में ।
16 दुख में सिमरण ना करें। बल्कि सुख काल में ही ध्यान करें।
17 किसी भी सूरत में कभी भी किसी का बुरा न चाहें ना सोचें ।

'वे नाम सुरति धारा' .....एक अदभुद्ध .....'बृहंगा मत्त'..... परा भक्ति पथ

18 अनहद ध्वणि को सुनने का प्रयास करे ।

19 सुरत व सार सब्द की शक्ति को कम ना आंकें, और इसे सर्वोपरि जानें, साहिब सतगुरू का शुक्रिया करें जिन्होंने आपको निराकार दायरे से उपर सहज मार्ग की सत्ता के लिए चुना। इस कारण आप इस ब्रह्मण्ड के सबसे सर्वश्रेष्ठ व अमीर व्यक्तित्व हो ।

20 सांसारिक देह व ह्रदय के प्रेम मोह से उपर उठें और सच्ची प्रीत जो सुरति की प्रीत है, उसे सार सब्द और सतगुरू ध्यान से विकसित करें ।

21 हमारे परमपूजनिय, वन्दनिय और श्रदेय सतगुरू परमहंस 'श्री वे नाम जी' की सुरति द्वारा प्रदित भजनों को अपने अंदररमा कर और सुरति में भी गा गा कर वैराग्य भाव पैदा करें।

22 इस वैराग्य द्वारा अपने अश्रुओं को साहिब चरण में अर्पण करो ।

23 बस खाली होने और भूलने और छोड़ने की कला को जानों ।

24 साधना करनी है तो खाना कम करो ।

25 अपनें श्वासों का निज अवलोकन करें और निहारें ।

26 साधक को भक्ति करने के लिए नींद कम करनी चाहिए ।

27 सुरत कमल पर प्राण सैंचित कर साहिब को प्रणाम करें ।

28 अगर सतगुरू जी की किसी बात का बुरा लगे तो समझें अभी सत भक्ति मार्ग से कौसों दूर हैं।

29 सतगुरू का कहा मान बस लीजै, सत असत विचार मत कीजै।

(Satguru Satnam Satt Sahib Ji)